

मात्स्यिकी और जलकृषि में जीविकोपार्जन मसले



केरल के एक तटीय गाँव में किए विश्लेषणात्मक अध्ययन के प्रसंग में तटीय मछुवारों का जीविकोपार्जन मसले

विपिनकुमार वी.पी.

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन - 682 018, केरल

सारांश

केरल के एर्नाकुलम जिला के एडवनक्काड तटीय गाँव के तटीय मछुवारों के जीविकोपार्जन उपाय और उनके समाज-आर्थिक परिदृश्य का गहरा विश्लेषण इस अध्ययन में हुआ है। स्थितियों के विश्लेषण के बाद उनके प्रबलीकरण के अनुकूल की प्रौद्योगिक-माँग, प्राथमिकता के क्रम में पहचानी गई है।

अध्ययन विलेज ट्रान्सेक्ट सोशल मैप, रिसोर्स मैप वेन डायग्राम, माट्रिक्स रैंकन, प्रोब्लम ट्री विश्लेषण आदि सहयोगी ग्रामीण मूल्यांकन (PRA) तकनीकों द्वारा चलाया। यहाँ के 150 लोगों से किए साक्षात्कार की प्रतिक्रियाओं का आकलन करके उनकी मुख्य कठिनाइयाँ पहचानी गई और प्राथमिकता क्रम में उनके द्वारा अभिकाम्य सुझाया कार्यक्षेत्रों का निर्धारण किया। मुख्य परवर्ती राशियाँ (variables) जैसे उधार संबंधी-तात्पर्य, वैज्ञानिक तात्पर्य, दायित्व लिए जाने का तात्पर्य, समाज-आर्थिक स्वरूप, सामूहिक सहयोग, प्रचार कार्यों में भागीदारी, संपर्क माध्यमों की पहुँच नगर-संपर्क, मूलधन व्यय-बजत, सामूहिक पूँजी, प्रवास आदि संबंधी परिमाणन किया गया। तकनॉलजी स्थिति और तकनॉलजी माँग का विश्लेषण करने पर प्राथमिकता के क्रम में मछली सुखाना, मछली संसाधन, मूल्यवर्द्धित उत्पाद, शीघ्र खाने और पकाने के उत्पाद अलंकार मछली संवर्धन, शंबु संवर्धन, खाद्य शुक्ति संवर्धन आदि मछली पर निर्भर रखनेवाले छोटे-छोटे उद्यम पहचाने गए। कृषि को आधार बनाके करनेवाले बड़े उद्यमों में शाक-वाटिका, तरकारी खेती, मेंग्रूव व अकैशिया पेड़ों का रोपण, काटरिंग यूनिट, धान पीसने का यूनिट, अलंकारी बागवानी आदि प्राथमिकता के क्रम में पहचाना गया। मात्स्यिकी-सह बड़े उद्यमों में काष्ठ ईंधन, कुक्कुट पालन, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, बढईगिरी, कंप्यूटर सेन्टर, मोमबत्ती यूनिट, छत्तरी यूनिट, चॉक



यूनिट क्रम में अभिकाम्य सूचित किया गया।

भूमिका

भारत के तटीय मछुवारा सामाजिक पिछड़ेपन और गरीबी से मुख्यधारा से कटे हुए हैं। पकड़ में हुई प्रतिशीर्ष कमी, बढ़ती आबादी और मत्स्यन के सिवा अन्य जीविकोपार्जन मार्गों का अभाव इसका कारण माना जाता है। ऐसे मछुवारों के उद्धार के लिए बहुविध रोजगारों पर सूचना और प्रौद्योगिकी प्रदान करना इस समय की माँग है। भारत के विविध समुद्रवर्ती राज्यों के मछुआरों का जीविकोपार्जन उपाय राज्य-राज्य में बदलता रहता है। उनके जीविकोपार्जन उपायों और प्रौद्योगिकी माँगों पर एक समेकित और विशद अध्ययन अभी तक नहीं किए जाने के कारण उनके समुद्धार के लिए एक प्रबंधकीय विकल्प आगे रखना आसान नहीं है। इसलिए केरल के एक तटीय गाँव में इस पर किया गया विश्लेषणात्मक अध्ययन और मिली सूचनाएं इस लेख में प्रस्तुत किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- 1) केरल के समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर के विभिन्न पणधारियों की समाज-आर्थिक सूचनाओं का संग्रहण
- 2) तटीय मछुवारों की जीविकोपार्जन स्थितियों का निर्धारण और उनके प्रबलीकरण के लिए प्रौद्योगिकी माँगों का पहचान और प्राथमीकरण

सैद्धांतिक अध्ययन

जीविकोपार्जन विश्लेषण का मतलब कृषकों द्वारा विविध प्रकार की कृषि संपदाओं से जीविकार्जन करने की रीति जिस में आपदा प्रबंधन भी शामिल है, की सूचना है (सबारत्नम 2000)। विश्वनाथन आदि (2002) ने सूचित किया कि विकासोन्मुख देशों की मात्स्यिकी बढ़ती तटीय आबादी, अतिविदोहन और संघर्षों के कारण दबाव की स्थिति में है। देश के विभिन्न

अभिकरणों और अनुसंधेताओं द्वारा उनके जीविकोपार्जन पहलुओं की समाज-आर्थिकता पर कई सूक्ष्म और विशद अध्ययन चलाए गए हैं (श्रीनाथ 1987; सत्यदास व पणिककर 1988; ओजिमाक्कुल आदि, 2000)।

किसी व्यक्ति या कुटुम्ब द्वारा अपने जीवन यापन के लिए किए जानेवाला उपाय और अर्जित संपत्ति जीविकोपार्जन विश्लेषण का विषय है (DFID, 2001; CBCRM संपदा सेन्टर 2003; ग्रहाम और तन्यांग 2001, आरसियेगा आदि 2002; आशबी, 2003)।

अध्ययन किए स्थान

केरल में एर्नाकुलम जिला के वैपीन द्वीप में स्थित एडवनक्काडु में अध्ययन चलाया गया। सहयोगी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीकों के अनुसार किए गए इस अध्ययन में यहाँ के मिट्टी, पानी, समुद्र तट वनस्पतिजातों के अलावा लोगों के सामूहिक स्थिति और जीविकोपार्जन उपायों का विश्लेषण किया गया। पहली मेखला समुद्र तटीय थी जहाँ की भूमि रेतीली थी। यहाँ मिट्टी अपरदन को रोकने के लिए मैंग्रूवों का रोपण किया गया था। दूसरी मेखला खेती के लिए अनुयोज्य भूमि थी जहाँ पेड़-पौधे और झोंपडियाँ थी। चावल और नारियल मुख्य फसल थे। सड़क के पास की तीसरी मेखला में खेत, चारा गाह, चिंगट हैचरियाँ दिखाए पड़े। चौथी मेखला में सारे प्रकार की वनस्पतियाँ, घर और झोंपडियाँ दिखाए पड़े। मुख्य फसल नारियल, सुपारी, काजू, केला आदि थे। फसलों पर कीटों का आक्रमण दिखाया पड़ा। तटीय मिट्टी कम उर्वरक थी। कायल (पश्चजल) पानी में रास-मालिन्य दिखाया पड़ा।

प्रत्येक राशियों का परिमाणन

यहाँ के 150 लोगों से किए वैयक्तिक साक्षात्कार के बाद विविध राशियों का मापन जो प्रतिशत मूल्य में कर दिया



गया है बक्स 1 में नीचे प्रस्तुत है।

बक्स 1 विविध राशियों का परिमाणन का विवरण

राशियाँ	एरनाकुलम के एडवनक्काडु में
उधार केलिए तात्पर्य	58%
आर्थिक प्रेरणा	62%
वैज्ञानिक तात्पर्य	58%
खतरा प्रबंधन	42%
समाज आर्थिक स्टेटस	33%
सामाजिक सहभागिता	53%
विस्तार अभिगम	64%
माध्यम - संपर्क	65%
नगर संपर्क	77%

तकनॉलजियों की माँग

छोटे-छोटे उद्यमों के सम्बन्ध में उनका तात्पर्य उस से जुड़ी प्रौद्योगिकियों का रैंकन बक्स सं 2 में प्रस्तुत है।

बक्स 2 एडवनक्काडु के प्रसंग में पहचाने गए प्रौद्योगिकी/लघु उद्यम-मछुआरों द्वारा किया गया प्राथमिकता रैंकन का विवरण

क्रम सं.	मात्स्यिकी से जुड़े लघु उद्यम	रैंक
1.	मूल्यवर्द्धित उत्पादों की तैयारी	3
2.	सूखामीन तैयारी	1
3.	मछली संसाधन एकक	2
4.	तैयार किया मछली उत्पाद	4
5.	पकाने के लिए तैयार मछली उत्पाद	5
6.	अलंकार मछली पालन उद्यम	6
7.	शंबु संवर्धन	7
8.	खाद्य शुक्ति संवर्धन	8
9.	सीपी संग्रहण	9
10.	मोती संवर्धन	10
11.	पंक केकडा पालन	11
12.	अन्य कुछ	-

लघु उद्यमों में मछली सुखाने के कार्य को प्राथमिकता मिल गयी, बाद में संसाधन कार्य; क्योंकि ये दोनों उद्यम उनके स्थल के लिए अनुकूल और आमदनी मिलनेवाली है।

कृषि पर आधारित अन्य बड़े उद्यमों की स्वीकार्यता संबंधी विवरण बक्स 3 में दिया गया है।

बक्स 3 कृषि पर आधारित लघु उद्यमों का रैंकन

क्रम सं.	कृषि पर आधारित लघु उद्यम	रैंक
1.	तरकारी खेती	2
2.	अलंकारी बागवानी	6
3.	पुष्प कृषि	7
4.	शाकवाटिका	1
5.	ओर्काड्स	12
6.	फल उत्पादन	8
7.	फल संसाधन	10
8.	स्नाक्स बार	9
9.	कैटरिंग यूनिट	4
10.	बेकरी यूनिट	11
11.	धान पीसने का यूनिट	5
12.	रेशम निर्माण यूनिट	13
13.	अन्य : मेंग्रोव और अकेशिया पेड़ों का रोपण	3

इसी प्रकार कृषि के सह सेक्टरों से जुड़े उद्यमों की प्राथमिकता संबंधी सूचना बक्स 4 में दी गयी है।

बक्स 4 कृषि के सह सेक्टरों से जुड़े उद्यमों की प्राथमिकता संबंधी रैंकन - एडवनक्काडु

सं.	सूक्ष्म उद्यम	रैंक
1.	साबुन निर्माण	10
2.	कपडा निर्माण	5
3.	कपडा विपणन	4
4.	बढईगीरी (काष्ठ-पत्थर)	4



5.	पशुपालन	3
6.	कुक्कुट पालन	2
7.	कंप्यूटर सेंटर	5
8.	बुनाई	12
9.	मोमबत्ती निर्माण	6
10.	चॉक निर्माण	8
11.	छत्तरी निर्माण	7
12.	फोमबेड निर्माण	9
13.	बाँस से बनाए हस्तशिल्प	11
14.	ईंधन काष्ठ	1
15.	अन्य कुछ	-

निष्कर्ष : तटीय मछुवारों के जीविकोपार्जन पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए केरल का तटीय गाँव एडवनक्काडु के चुने गए मछुआरों के बीच सहकारी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक के आधार पर किए इस विश्लेषणात्मक अध्ययन ने रोज़गार से जुड़ी उनकी समस्याओं व अभिरुचियों पर प्रकाश डालने में सहायक निकला। अध्ययन सहभागी अभिगम के आधार पर होने के कारण उनके जीविकोपार्जन के लिए उचित कई छोटे और बड़े उद्यमों की जानकारी प्रदान करने में और उनमें से उनकी पसंद की प्राथमिकताएं समझने में सहायक निकले। अतः इन प्राथमिकताओं के आधार पर तटीय मछुवारों के प्रबलीकरण के लिए आगामी योजनाएं खींचने का गुंजाइश इस अध्ययन से प्राप्त है।

